प्रातःक्लास 1.3.68 ओमशांति "आत्मा को एक बाप के सिवाय और याद नहीं"

ओमशांति। मीठे2 रुहानी बच्चों को रुहानी बाप बैठ समझाते हैं। जैसे हद के सन्यासी हैं वह तो घर–बार, धंधा–धोरी आदि सब छोड़ देते हैं ;क्योंकि वह समझते हैं हम ब्रह्म में लीन हो जावेंगे। इसलिए दुनियां से आसक्ति छोड़ देनी चाहिए। अभ्यास भी ऐसे ही करते रहेंगे। एकांत में जाकर रहते हैं। शुरुआत की बात करते हैं। विवेक भी ऐसे कहते हैं वह हैं हठयोगी तत्व ज्ञानी। समझते हैं ब्रह्म में लीन हो जावेंगे। इसलिए घर–बार से ममत्व मिटाने लिए छोड़ देते हैं। घृणा अथवा वैराग आ जाता है। फट से ममत्व नहीं मिटता है। याद आती रहती है। स्त्री, बच्चे आदि और अच्छा ही समय याद रहती है। यहां तो तुमको ज्ञान की बुद्धि सब सब कुछ भूलना है। कोई भी चीज इतना जल्दी नहीं भूलती है। अभी तुम यह बेहद का सन्यास करते हो। याद तो सब सन्यासियों को रहती है ;परंतु बुद्धि से समझते हैं हमको ब्रह्म में लीन होना है। देह का भान न रखना है ;परंतु उनसे फायदा तो कुछ भी नहीं होता। ऊँच पद तो मिलता ही नहीं। वह हैं ही हठयोगी मार्ग। समझते हैं हम यह शरीर छोड़ ब्रह्म में लीन हो जावेंगे। उनको यह पता नहीं है कि विनाश होना है। हम शांतिधाम कैसे जा सकते हैं। अभी तुम जानते हो हमको अपने घर जाना है। जैसे विलायत से आते हैं तो समझते हैं हमको बम्बई जाना है वाया.....अभ तुम बच्चों को भी यह पक्का निश्चय है यह पुरानी तो खतम होनी है। अभी हमको जाना है नई दुनियां में वाया शांतिधाम। यह सिर्फ तुमको पता है। वह भी जिनको पक्का निश्चय है। बहुत हैं जो कहते हैं हां, इन्हों की पवित्रता बहुत अच्छी है। ज्ञान अच्छा है, संस्था अच्छी है। माताएं मेहनत बहुत करती हैं ;क्योंकि अथक हो समझाती हैं। अपना तन–मन–धन इसमें लगा देती हैं। इसलिए अच्छी लगती हैं ;परंतु हम भी ऐसा अभ्यास करें वह खयाल भी नहीं आवेगा। कोई विरला ही निकलते हैं। वह तो बाप भी कहते हैं कोटों में कोऊ अर्थात् जो तुम्हारे पास आते हैं उनसे कोई निकलते हैं। बाकी यह पुरानी दुनियां खतम होनी ही है। तुम जानते हो अभी बाबा आया हुआ है। सा0 हो न हो। विवेक कहते हैं बेहद का बाप आया हुआ है। यह भी तुम बच्चे जानते हो। दो बाप हैं। एक तो है ज्ञान का सागर पारलौकिक बाप। लौकिक को तो कब ज्ञान का सागर नहीं कहेंगे। यह भी बाप आकर तुम बच्चों को अपना परिचय देते हैं। अभी तुम समझते हो यह पुरानी दुनियां खतम होती है। हमने 84का चक्र पूरा किया है। अभी हम पुरुषार्थ करते हैं वापस सुखधाम जाने वाया शांतिधाम। शांतिधाम तो जरूर जाना है। वहां से फिर यहां वापस आना है। मनुष्य तो इन बातों में मूंझे हुए हैं। कोई मरता है तो समझते हैं यह भी वैकुण्ठ गया; परंतु वैकण्ठ है ही कहां?यह वैकुण्ठ का नाम सिर्फ तुम भारतवासी ही जानते हो। और धर्म वाले जानते नहीं। सिर्फ नाम सुना है। चित्र देखते हैं। देवताओं के मंदिर आदि बहुत देखते हैं। जैसे यह दिलवाला मंदिर है। लाखों–करोड़ों रुपया खर्चा किया है। बनाते ही रहते हैं। उनके लिए फंड्स बहुत हैं। देवी–देवताओं को वैष्णव कहेंगे। विष्णु के वंशावली। वह तो हैं ही पवित्र। ऐसी कोई चीज नहीं होती है जो अपवित्र बने। ड्रामा में पार्ट ही नहीं। सतयुग को कहा ही जाता है पावन दुनियां। अभी पतित है। सतयुग के वैभव आदि यहां होती नहीं। यहां तो अनाज आदि सब चीज तमोप्रधान बन जाती। स्वाद भी तमोप्रधान। बच्चियां ध्यान में जाती हैं कहती हैं। कहती हैं हम वहां भी सोमीरस पीते हैं। बहुत स्वादिष्ट होता है। यहां भी तुम्हारे हाथ का खाते हैं तो कहते हैं यह तो बहुत ही स्वादिष्ट है ;क्योंकि तुम अच्छी रीत बनाते हो। केक, बिस्कुट आदि स्वादिष्ट होती है ना। तब तो दिल करके खाते हैं। वहां तो हर चीज सतोप्रधान होती है। इसलिए बहुत स्वादिष्ट होती होगी। यह भी तुम अभी ही जानते हो। ऐसे नहीं यहां तुम बहुत योग में रह बनाते हो इसलिए यह स्वादिष्ट हो जाती है। नहीं। यह तो प्रैक्टिस पर है। कोई बहुत अच्छा बना लेते हैं। कोई कम बाकी। ऐसा नहीं योग में रह बनाया इसलिए स्वादिष्ट हुआ। ऐसे नहीं है। पवित्र तो बहुत ही रहते हैं। बाकी वहां नई दुनियां में हर चीज सतोप्रधान होती है। इसलिए चीज़ में ताकत रहती है। सतोप्रधान है तो बहुत ताकत रहती

है। तमोप्रधान होने से फिर ताकत कम हो जाती है। बाकी ऐसे नहीं कि मल्लयुद्ध आदि लड़ते हैं। नहीं। उनमें भी दुःख होता है ना। वहां दुःख का कोई खेल आदि होता ही नहीं। नाम ही है सुखधाम। दुःख की बात ही नहीं। यह भी टेम्पेटेशन है ना। हम इतने सुख में जाते हैं। जिसको स्वर्ग सुख कहा जाता है। सिर्फ तुमको पवित्र बनना है। सो भी इस जन्म के लिए। पीछे का खयाल तुम मत करो। अभी तुम पवित्र बनो। पहले तो विचार करो। कहते कौन हैं? बेहद का बाप का परिचय देना पड़े। बेहद के बाप से बेहद सुख का वर्सा मिलता है। लौकिक बाप भी पारलौकि बाप को याद करते हैं। बुद्धि ऊपर चली जाती है। जानते कुछ भी नहीं। तुम बच्चे अभी जानते हो। जो निश्चय बुद्धि पक्के हैं उन्हों को तो अंदर में रहेगा इस दुनियां में बाकी थोड़े रोज हैं। यह तो कौड़ी मिसल शरीर है। आत्मा भी कौड़ी मिसल बनी हुई है। इसको वैराग्य कहो, घृणा कहो, नफरत कहो बात एक ही है। सन्यासी भी कहते हैं स्त्री नागिन है। तो नफरत हुई ना। नफरत अक्षर थोड़ा.....जैसे नालायक अक्षर थोड़ा तीखा है। न लायक कहो तो कुछ खयाल नहीं होगा। अभी तुम ड्रामा को तो जान चुके हो। भक्तिमार्ग का भी पार्ट चलना ही है। सब भक्ति में हैं। नफरत की दरकार नहीं। सन्यासी खुद नफरत दिलाते हैं। घर में सब दुःखी हो जाते। वह खुद जाकर अपने को थोड़ा सुखी करते हैं। वापस मुक्ति में तो कोई भी जा न सके। जो भी आते हैं वापस कोई गया नहीं है। सब यहां ही हैं। एक भी निर्वाणधाम वा ब्रह्म में नही गया है। वह तो समझते हैं फलाना ब्रह्म में लीन हो गया। यह सब भक्तिमार्ग के शास्त्रों में है। बाप कहते हैं इन शास्त्रों में जो कुछ है भक्तिमार्ग यानी दुर्गति मार्ग। इसलिए तुम कोई भी शास्त्र हाथ में नहीं उठावेंगे ;परंतु ऐसे भी हैं जिनमें नॉवेल पढ़ने की भी आदत है। ब्राह्मणियां भी छिपाकर नॉवे पढ़ती हैं। ज्ञान तो पूरा है नहीं। इसको कहा जाता है कुकर–ज्ञानी। रात को नॉवेल पढ़ते2 नींद आ जाती। नॉवेल पढ़ते नींद आती है उनकी क्या गति होगी? आदत पड़ जाती है तो फिर पढ़ने बिगर रह नहीं सकतीं? यहां तो बाप कहते हैं पढ़ा हुआ सब भूलो। बच्चों को भी शरीर निर्वाह अर्थ तो वह विद्या पढ़ने की दरकार ही नहीं। उनको तो सिर्फ दो रोटी ही चाहिए। बाप कहते हैं और सब बातें छोड़ दो। स्कूल में पढ़ने जाते हैं तो उनसे क्या फायदा होगा? इससे तो इस रुहानी पढ़ाई में लग जाओ। यह तो भगवान पढ़ाते हैं जिससे तुम यह देवता जाकर बनेंगे 21जन्मों लिए। तो वह जो कुछ पढ़ी हुई है भुलाना पड़ता है। एकदम बचपन में चले जाते हो। अपन को आत्मा समझना है। भल इन आंखों से देखते हैं ;परंतु दिव्य बुद्धि मिली हुई है तो समझते हैं यह सब पुरानी दुनियां है। यह सब खतम हो जानी है। यह सब कब्रिस्तान है। इनसे क्या दिल लगावेंगे? अभी तो परिस्थानी बनना है। तुम अभी कब्रस्थान और परिस्थान के बीच में बैठे हो। परिस्थान अभी बन रहा है। अभी बैठे पुरानी दुनियां में ;परंतु बीच में। बुद्धि का योग वहां चला गया है। तुम पुरुषार्थ ही नई दुनियां के लिए कर रहे हो। अभी बीच में बैठे हुए हो पुरुषोत्तम बनने लिए। पुरुषोत्तम संगमयुग का किसको भी पता नहीं है। पुरुषोत्तम मास ,पुरुषोत्तम वर्ष का भी अर्थ नहीं समझते हैं। तुम बच्चे जानते हो यह पुरुषोत्तम संगमयुग 50वर्ष का छोटा है। टाइम बहुत थोड़ा मिलता है। देरी से यूनिवर्सिटी में आवेंगे उनको तो बहुत मेहनत करनी पड़े। तुम देखतेहो इतने समय से माथा मारते हैं याद करने के लिए तो भी याद ठहरती नहीं। माया विघ्न बहुत डालती है। तो बाप समझाते हैं यह पुरानी दुनियां खतम होनी है। बाप भल यहीं बैठे हैं। देखते हैं ;परंतु बुद्धि में यह तो सब खतम हो जाना है। कुछ भी है नहीं। इनके लिए भी ऐसा होता है। बीच में तुम बच्चों को देखते हैं। देखते हुए भी जैसे कि नहीं देखते हैं। यह तो पुरानी दुनियां है। इनसे नफरत हो जाती है। शरीरधारी भी पुराने हैं। शरीर तमोप्रधान तो आत्मा भी तमोप्रधान ऐसी चीज को हम देखकर क्या करें?यह तो कुछ भी नहीं है। इनसे प्रीत नहीं। इसलिए कहां भी बाहर नहीं जाता हूं। बच्चों में भी बाबा का दिल उनसे लगती है जो बाप को अच्छी रीत याद करते हैं और सर्विस करते हैं। बाकी

बच्चे तो बाप के सभी हैं। कितने ढेर बच्चे हैं। सभी तो कमी देखेंगे भी नहीं। प्रजापिता ब्रह्मा को तो जानते ही नहीं। याद भी नहीं करते हैं। लौकिक बाप और पारलौकिक बाप को याद करते हैं। बाकी इनको मानते ही नहीं। प्रजापिता ब्रह्मा का नाम है ; परंतु उनसे क्या मिलता है यह कुछ भी पता नहीं है। अजमेर में ब्रह्मा का मंदिर है। दाढ़ी वाला दिखाया है ;परंतु उनको तो कोई याद ही नहीं करते ;क्योंकि उनसे वर्सा मिलना ही नहीं है। आत्मा को वर्सा मिलता है एक लौकिक बाप से दूसरा पारलौकिक बाप से। यह है वंडरफुल। बाप होकर और वर्सा न दे। यहो तो अलौकिक ठहरा ना। वर्सा होता है हद का और बेहद का। बीच का वर्सा होता ही नहीं। भल प्रजापिता कहते हैं ;परंतु वर्सा कुछ भी नहीं। इसलिए बाबा कहते हैं तुम इनका भी फोटो आदि क्यों रखते हो?इनसे तो कुछ मिलना ही नहीं है। यह तुम अभी जानते हो इस अलौकिक बाप को भी पारलौकिक बाप से वर्सा मिलता है। तो जरूर देंगे कैसे? पारलौकिक बाप इनके थ्रू देता है। यह है रथ। है भी पुराना सड़ा हुआ रथ। इनको क्या याद करेंगे? इनको तो खुद भी उस बाप को याद करना पड़ता है। वह लोग समझते हैं यह ब्रह्मा को ही परमात्मा समझते हैं। अरे, पारलौकिक अथवा लौकिक बाप मिसल भी नहीं समझते हैं ;क्योंकि इनसे वर्सा नहीं मिलता है। वर्सा तो एक शिवबाबा से ही मिलता है। यह तो बीच में दलाल रूप में हैं। जैसे हम वैसे यह। यह भी हमारे जैसा स्टुडेंट है। डरने की तो कोई बात ही नहीं। बाप कहते हैं इस समय सारी दुनियां ही तमोप्रधान है। अभी तुमको योगबल से सतोप्रधान बनाना है। यह भी बहुत जन्मों के अंत में पूरा तमोप्रधान है। उनसे फिर वर्सा क्या मिलेगा?लौकिक बाप से तो अल्पकाल लिए वर्सा मिलता है। तुमको अभी बुद्धि को बेहद में लगाना है। और कोई से नहीं। बाप कहते हैं सिवाय बाप के और कोई से भी कुछ मिलना न है। फिर भल देवताएं हो। उनकी पूजा करते हो, माथा टेकते हैं ;परंतु मिलेगा क्या?उन्हों की आत्मा तो तमोप्रधान है। देवताएं जो पहले2 आये वे तमोप्रधान में हैं। लौकिक बाप का वर्सा तो मिलता ही है। बाकी इन ल.ना. से तुम क्या चाहते हो? वह लोग तो स(म)झते हैं यह है ही है। कब मरते नहीं। तमोप्रधान बनते ही नहीं। तब तमोप्रधान में कौन आवेंगे? सतोप्रधान वाले ही तमोप्रधान में आवेंगे ना। श्रीकृष्ण को ल.ना. से भी ऊँच समझते हैं ;क्योंकि वह फिर तो शादी किया हुआ है ना। श्रीकृष्ण तो जन्म से ही पवित्र है। इसलिए श्रीकृष्ण के लिए बहुत महिमा है। तुम झूलों में झुलाते भी हो श्रीकृष्ण को। जयंती भी श्रीकृष्ण की मनाते हो। ल0ना0 की क्यों नहीं? पूरा ज्ञान न होने कारण श्रीकृष्ण को द्वापर में ले गए हैं। समझते हैं गीता का ज्ञान द्वापर में दिया। कितना कठिन है किसको समझाना। कह देते परम्परा से यह ज्ञान चला आया है। परंतु कब से? यह कोई भी नहीं जानते। पूजा कब शुरू हुई कुछ भी पता नहीं। इसलिए कह देते हम रचता और रचना के आदि,मध्य,अंत को नहीं जानते हैं। ऐसे नहीं परम्परा कह देते हैं। जब इन ल0ना0 का राज्य था तो क्या रावण भी था? लाखों वर्ष आयु कह देने से परम्परा कह देते हैं। तिथी–तारीख कुछ भी नहीं जानते। ल0ना0 का भी जन्मदिन मनाते नहीं। इसको कहा जाता है अज्ञान अंधियारा। तुम्हारे में भी यथार्थ रीति इन बातों को नहीं जानते हैं तब तो कहा जाता है महारथी,घोड़ेसवार,प्यादे। गज को ग्राह ने खाया। ग्राह बड़े2 होते हैं। एकदम हप कर लेती है। जैसे सर्प मेढक को हप करता है। (हिस्ट्री सुनाना)। अनेक प्रकार के जनावर होते हैं। भगवान को बागवान ,माली ,खेवैया क्यों कहते हैं यह भी अभी तुम समझते हो। बाप आकर विषय सागर से पार ले जाते हैं। गाते भी हैं नइया मेरी पार लगाने वाले.....। तुमको भी अभी पता है हम कैसे पार जाते हैं। बाप हमको उस पार क्षीर सागर में ले जाते हैं। वहां दुःख की बात ही नहीं। जरा भी गफलत की बात नहीं। सिर्फ बाप कहते हैं मामेकम् याद करो। तुम सेन कर औरों को कहते हो। नइया पार करने वाला खेवइया कहते हैं। बच्चे अपन को आत्मा समझो। तुम पहले क्षीर सागर में थे अभी विषय सागर में आकर पड़े

हो। पहले2 तुम देवताएं थे। वह है वंडर ऑफ वर्ल्ड। सारी दुनियां में रुहानी वंडर है स्वर्ग। नाम सुनकर ही कितने खुश होते हैं। हेविन में तो तुम रहते हो। यही सात वंडर्स कहते हैं। समझो ताज को भी वंडर कहते हैं ;परंतु उसमें रहने का थोड़े ही है। तुम तो उस वंडर आफ वर्ल्ड के मालिक बनते हो। तुम्हारे रहने लिए कितना वंडरफुल वैकंठ बनता है। 21जन्मों लिए पदमापदमपति बनते हो। तो कितनी तुमको खुशी होनी चाहिए। हम उस पार जा रहे हैं। अनेक बार तुम बच्चे स्वर्ग में गए होंगे। यह चक्र हम लगाते ही रहेंगे। तो पुरुषार्थ भी ऐसा करना चाहिए ना। नई दुनियां में पहले2 जावें। पुराने मकान में जाने थोड़े ही दिल होगी। बाबा जोर देते रहते हैं पुरुषार्थ कर नई दुनियां में जाओ। बाप से हम वंडर ऑफ वर्ल्ड के मालिक बनते हैं। तो ऐसे बाप को हम क्यों नहीं याद करेंगे। एकदम पुरुषार्थ में लग जाना चाहिए। बहुत मेहनत करनी है। शौक चाहिए ना। बाप कहते हैं तुम सबसे आगे जा सकते हो। किसको देखो ही नहीं। जानते हैं यह तो तमोप्रधान दुनियां है। इनको देखते हुए जैसे कि नहीं देखो। बाप कहते हैं मैं भल देखता हूं ;परंतु मेरे में ज्ञान है। मैं थोड़े ही रोज के लिए आया हूं। मैं मुसाफिर हूं। जैसे बाबा वैसे तुम भी यहां आये हो पार्ट बजाने। पुरानी चीज को क्या देखना है। यह है घर बैठे सारी विश्व का सन्यास। पति को भी देखते हुए समझते हैं यह तो पुराना शरीर है। हमको तो अभी बेहद का बाप मिला है। विश्व का मालिक बनना है। यह पाई–पैसे वो क्या करेंगे? पति को देखते हुए नहीं देखते हैं। अगर वह बाप को याद नहीं करते हैं तो उनसे नफरत आती है ;क्योंकि हंस और बगुला हो गया ना। वह हो गया रावण सम्प्रदाय। दुश्मन ;परंतु इसमें बड़ी ताकत चाहिए। कितनी मारें खाती हैं। कोई तो कहते हैं बाबा इनको कुछ बुद्धि दो तो हमारे बंधन टूटे। या तो इससे मर जावे। इसने हमको बहुत तंग किया है। अज्ञान काल में लौकिक बाप का भी बच्चा नालायक होता है तो कहते हैं इससे तो यह मर जाता। बेहद का बाप भी ऐसे ही कहते हैं। फिर समझते हैं इनके तकदीर में जो होगा वहीं होगा। बाप तो कहेंगे इतना तंग करते हैं इससे तो अपने घर चले जायें तो अच्छा। ऐसे नहीं कहते हैं कि मर जावे। अपने घर अर्थात् मृत्युलोक मे जाये। अभी तुम विष्णपुरी के मालिक बनते हो। तुम रुहानी वैष्णव बनते हो। वह तो हैं जिस्मानी वैष्णव। मूल बात तो है विकार की। हम वैष्णव उनको कहते हैं जो विकार में नहीं जाते हैं। वैष्णव अक्षर विष्णु से निकला है। विष्णु के संतान हैं देवताएं। वह तो विकार में जाते ही नहीं। बोलो तुम तो कलियुग वैष्णव हो। वह सतयुग में थे, तुम नर्क में हो। ऐसी2 बातें सुनाओ तो नशा चढ़े। काम कटारी चलाना यह हिंसा बड़ी भारी है। यह आदि,मध्य,अंत जन्म–जन्मांतर दुःख देने वाली है। तुम्हारे में भी जब योग का जौहर होगा तब तीर अच्छा लगेगा। बाबा हर चीज को जानते हैं। घर की हाल–चाल सब बाबा पूछते हैं। स्त्री छिपाकर लिखती है बाबा हमको पति तंग करते हैं और उनसे पूछें तो कहेंगे हम तो पवित्र रहते हैं। बाबा तो चोटी पर बहुत जोर से चढ़ाते हैं। बहिन–भाई के सम्बंध से भी ऊपर जाओ। भाई2 समझो। बहिन–भाई की सम्बंध बाद फिर भाई2 का सम्बंध आता है। जब नजदीक आते हो तो कहा जाता है भाई2 के सम्बंध से देखो। हरेक को अपना खुद डाक्टर बन अपनी नब्ज देखनी है। अंतर्मुख होकर देखा हमारे में कोई अवगुण तो नहीं है। यह भी अभ्यास करना है। यह तो सब खतम हो जाने वाला है। बाल–बच्चे ऐसी दुनियां ही खतम होती है। यह जब पक्का हो तब ही ममत्व भी निकलता जाये। अगर अपना कल्याण करना चाहते हो तो। बाप समझाते हैं अभी पुरुषार्थ न करेंगे तो बहुत पछतावेंगे। हमको बाप ने कितना समझाया ,हमने माना नहीं। अब तो हमारा यह पद हो जावेगा। तुम ऊपर से नीचे उतरते2 एकदम मैले हो गए हो। फिर साफ करना है। खुशी होनी चाहिए हम सारे विश्व को पावन बनाने के निमित्त बने हैं। बाप का फरमानबरदार बच्चा बनना चाहिए। ज्ञान और योग में कच्चे तो पद भी कम। बाप समझाते तो बहुत अच्छी रीत हैं। अच्छा ,मीठे बच्चों को गुडमार्निंग ,नमस्ते।